

معنى شهادة ان لا اله الا الله
(الهندية)

कलमाशहादतकाअर्थ

الشيخ / عبد الكريم الديوان
(امام وخطيب، جامع الزبير بن العوام، حي النهضة)

© المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد (الروضة)، ١٤١٧هـ

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر

الديوان، عبدالكريم

معنى لا إله إلا الله / ترجمة عتيق الرحمن الأثري .. الرياض .

.. ص : .. سم

ردمك : ۱ - ۵ - ۹۱۲ - ۹۹۷۰

(النص باللغة الهندية)

٢- الشهادة (أركان الإسلام)

١- التوحيد

أ- الأثري، عتيق الرحمن (مترجم) ب- العنوان

14/1022

ديوي ۲۴۰

رقم الإيداع : ١٧/١٥٣٢

ردمك : ۱ - ۵ - ۹۱۲ - ۹۹۷.

راجع النص العربي

فضيلة الشيخ / عبد الله بن عبد الرحمن الجبرين

الحمد لله وحده

وبعد فقد اطلعت على هذه الأوراق في معنى لاله الا الله وشروطها وما تستلزمه وهي صحيحة موافقة للأدلة ولتفسير العلماء المعتبرين .

قاله وكتبه عبد الله بن عبد الرحمن الجبرين عضو الأفتاء برئاسة ادارة البحوث العلمية والأفتاء .

وصلى الله على محمد وآله وصحبه وسلم

المبدئيه ونده

وسيه فقد اطلعت على هذه الأوراق في معنى لاله الا الله وشروطها وما تستلزمه وهي صحيحة موافقة للأدلة ولتفسير العلماء المعتبرين قاله وكتبه عبد الله بن عبد الرحمن الجبرين عضو الأفتاء برئاسة ادارة البحوث العلمية والأفتاء وصل الى مديره وأرسله يوم
١٤١٦/٢/١١

कलमा का अर्थ

समस्त मुसलमानों का इस पर इत्तिफाक है कि इसलाम धर्म की जड़ तथा मखलूक पर लागू होने वाली सर्वप्रथम कर्तव्य इस बात की गवाही देना है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, और मुहम्मद स० अल्लाह के रसूल (दूत) हैं।

इसी कलमा को पढ़कर काफिर मुसलमान बनता है, एवं इसलाम का कट्टर शत्रु अपने भीतर ऐसी परिवर्तन लाता है कि उसकी दुश्मनी दोस्ती में बदलजाती है, और धन, प्रणि को सुरक्षा का अधिकार मिलजाता है। अतः एक काफिर जब तक अपनी ज़बान से यह कलमा नहीं पढ़े गा वह मुसलमान नहीं कहलायेगा, क्योंकि यही इसलाम धर्म की कुंजी तथा प्रथम स्तंभ है-

जैसा कि निम्नि हदीस से यह बात पूर्ण रूप से स्पष्ट है :

इसलाम की बुनियाद पाँच स्तंभों पर स्थापित है, प्रथम इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई

« بني الإسلام على خمس شهادة أن لا إله إلا الله وأن محمداً رسول الله »
(أخرجه الشيخان)

उपास्य नहीं, तथा मुहम्मद स० अल्लाह के रसूल (दूत) हैं, (बुखारी, मुसलिम)

शक्ति के बावजूद कलमा न पढ़ना

इसलाम धर्म के महान विद्वान इमाम इब्न तैमिया रहि० का कथन है कि जो मनुष्य शक्ति रखते हुये कलमा नहीं पढ़ेगा वह सारे मुलमानों के दृष्टि में काफिर है, यदि वह किसी उचित कारण से विवश है तो उस की हालत के अनुसार उस पर हुक्म लागू होगा.

ला इलाहा इल्लल्लाह का अर्थ

कलमा लाइलाहा इल्लल्लाह एक ऐसी वाक्य है जिस में निषेध एवं इकार दो चीजें पाई जाती हैं, इसके प्रथम भाग लाइलाह में निषेध है तथा दुतीय भाग इल्लल्लाह में इकार है, तो इस प्रकार इस का अर्थ यह हुआ कि ईश्वर के इलावा कोई भी सत्यतः उपासना योग्य नहीं.

कुछ मूर्खजनों का विचार है कि कलमा लाइलाह इल्लल्लाह का अर्थ केवल यह है कि इसे जुबान से पढ़ लिया जाये, या अल्लाह के बुजूद को मान लिया जाये, या संसार की समस्त चीजों पर बिना किसी भागीदारी के उसकी शासन को कबूल कर लिया जाये, किन्तु यह विचार व्यार्थ और निन्दनीय है.

क्योंकि अगर कलमा का अर्थ यह होता तो अहले किताब (यहूदी, ईसाई) तथा ब्रुत और मूर्तियों के पूजा करने वालों को तौहीद (एकेश्वरवाद) की ओर निमंत्रण देने की ज़रूरत और अवश्यता ही क्या थी जबकि यह लोग भी इतनी बातों पर विश्वास रखते थे.

संदेह तथा उत्तर

कुछ लोग यह शंका करते हैं कि कल्मह लाइलाहा इल्लाहा का उपरोक्त अर्थ कैसे दुरुस्त और सही हो सकता है जबकि अल्लाह के अतिरिक्त बहुत सारी वस्तुएँ हैं जिन की पूजा की जाती है, और स्वयं ईश्वर ने पवित्र क़ुआन में इन के लिये 'आलिहा' अर्थात् ईश्वरों का शब्द प्रयोग किया है, जैसा कि अल्लाह पाक क़ुआन में इरशाद फरमाता है:

فما أغنت عنهم آلهم
 التي يدعون من دون
 الله من شيء لما جاء
 أمر ربك. (هود: ١٠١)
 जब तुम्हारे रब का अज़ाब
 आगया तो इनके वह
 उपास्य कुछ काम न आये
 जिन को यह अल्लाह के
 अतिरिक्त पुकारते थे - सूरह हूद: (१०१)

तो इस संदेह का उत्तर यह है कि यह
 उपास्य असत्य और निन्दनीय हैं, यह किसी भी
 प्रकार उपासना योग्य नहीं हैं, और इस का
 प्रमाण पवित्र कुरआन की निम्न शुभ आयत है
 यह इसलिये कि अल्लाह
 ही सत्य है और उस के
 अतिरिक्त समस्त चीजे
 जिनको वह पूजते हैं गलत
 हैं और अल्लाह बलन्द तथा
 बड़ाई वाला है - सूरह हज: (६२) -

इस वार्ता से यह बात निखर कर सामने आ गई कि कलमा तौहीद का शुद्ध अर्थ यह है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं, और इसी का नाम तौहीद है, और उपरोक्त संदेह व्यर्थ एवं गलत है-

**उपासनाओं की स्वीकारता
तथा शुद्धता कलमा शहादत
पर आधारित है-**

मनुष्य का कोई कार्य अथवा उपासना अल्लाह के निकट उस समय तक स्वीकारनीय नहीं है जब तक कि वह तौहीद (एकेश्वरवाद) को न अपना ले, अर्थात् वह इस बात की गवाही दे कि अल्लाह के सिवा कोई पूजनीय नहीं। यदि वह एकेश्वरवाद से दूर है तो उसकी सारी उपासनाएँ नष्ट और बेकार होंगी-

क्योंकि शिर्क जो एकेश्वरवाद का विलोम है इसके संघ में कोई इबादत (उपासना) लाभदायक नहीं, चूनां चि अल्लाह पवित्र क़ुआन में इरशाद फरमाता है:
 अल्लाह के साथ भागीदार ما كان للمشركين أن
 बनाने वालों का यह काम يعمروا مساجد الله
 नहीं कि वह मसजिदों को شاهدين على أنفسهم
 बसायें जबकि यह अपने بالكفر أولئك حبّطت
 ऊपर क़ुफ़्र के गवाह हैं أعمالهم وفي النار هم
 इनकी उपासनाएँ अकारत خالدون. توبة: ١٦
 हैं और इन्हें सदैव जहन्नम
 (नरक) में रहना है - (सूरह तौबा: १६)

कलमा शहादत की दुरुस्तगी के
 लिये निम्न चीज़ें अनिवार्य हैं
 यहाँ पर एक प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या

केवल जुबान से कलमा पढ़ लेना लाभदेगा या इसके लिये अन्य चीजों की भी जरूरत है ? तो इस विषय में कुछ मनुष्यों का विचार है कि केवल कलमा पढ़ लेना काफी है और किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है, किन्तु यह सोच गलत और उनकी मूर्खता का दृढ़ प्रमाड़ है, क्योंकि कलमा शहादत केवल एक वाक्य नहीं जिसको जुबान से कह लिया जाये बल्कि इसका एक महत्वपूर्ण अर्थ है जिसका पाया जाना भी अति अनिवार्य है-

इसलिये कोई व्यक्ति वास्तविक मुसलिम उस समय तक नहीं होगा जब तक कि वह उसे अपने हृदय से स्वीकार कर के अपना प्रत्येक कार्य इसके अनुसार न करने लगे, और इसके विप्रीत तमाम कामों से दूर रहे -

यदि किसी मनुष्य ने कलमा पढ़ लिया मगर उसके अर्थ का उसे ज्ञान नहीं और न उस के कार्य इसके अनुकूल हैं तो उसका कलमा पढ़ना किसी भी प्रकार लाभदायक नहीं, इस आधार पर कलमा शहादत की दुरुस्तगी के लिये निम्नलिखित छे चीजें अनिवार्य हैं-

१- सारी उपासनाएँ केवल अल्लाह के लिये की जायें, अर्थात् मनुष्य की नमाज़, रोज़ा, दुआ फरयाद, नज़र, मन्नत, भेंट, कुबानी और शेष उपासनाएँ केवल अल्लाह के लिये हों, इनका एक मामूली भाग भी अल्लाह के अतिरिक्त किसी सृष्टि के लिये कदापि न हो चाहे वह कितने ही ऊँचे पद पर क्यों न हो, यदि किसी व्यक्ति ने ऐसा किया तो उसकी गवाही बेकार होजायेगी और वह एकेश्वरवाद के मार्ग से हट

कर अल्लाह के साथ भागीदार बनाने वाला हो जायेगा, चुनौती अल्लाह पवित्र कुआन पाक में इरशाद फरमाता है :

और तुम्हारे रब आदेश दिया وقضى بك أن لا
 कि तुम लोग केवल उसी की تعبدوا إلا إياه
 उपासना करो. इसरा: २२ الاسراء: २२

और यही लाइलाहा इल्लल्लाह का अर्थ है -

और सम्पूर्ण आलिमों का इस बात पर इतिफाक है कि जो मनुष्य कलमा पढ़ने के बावजूद अल्लाह के साथ भागीदार बनाता है वह काफिर है, उस से युद्ध की जायेगी यहाँ तक कि वह शिर्क को छोड़कर तौहीद (एकेश्वरवाद) के मार्ग पर कायम होजाये -

२- अल्लाह और रसूल (दूत) की सूचना दी हुई समस्त बातों पर पूर्ण विश्वास रखना ,

अर्थात् किसी व्यक्ति का कलमा शहादत पढ़ना उस समय तक सिद्ध नहीं होगा जब तक कि वह स्वर्ग, नरक, आसमानी पुस्तकों, रसूलों, अन्तिम दिन और अच्छी बुरी तकदीर के सम्बंध में अपना विश्वास दृढ़ न कर ले-

३- अल्लाह के अतिरिक्त जिन जिन वस्तुओं अथवा व्यक्तियों की पूजा की जाती है उन की भक्ति तथा उपासना का इनकार करना जैसा कि मुसलिम शरीफ की हदीस है कि प्यारे नबी स० ने फरमाया है:

जिस व्यक्ति ने कलमा من قال لا اله الا الله

लाइलाहा इल्लल्लाह وكفر بما يعبد من دون

पढ़ा तथा उन तमाम الله حرم ماله ودمه

चीजों का इनकार किया وحسابه على الله

जिनकी अल्लाह के अतिरिक्त أخرجه مسلم

पूजा की जाती है तो उसका धन खंरकित सुरक्षित हो गये, और उसका हिसाब किताब अल्लाह के समर्पित है-

इस हदीस में प्यारे नबी स० ने धन खंरकित की रक्षा को दो चीजों पर आधारित किया है, पहली चीज कलमा लाइलाहा इलल्लाह का पढ़ना, और दूसरी चीज यह कि अल्लाह के अतिरिक्त तमाम चीजों की उपासना का इन्कार करना, इसलिये वही व्यक्ति वास्तविक मुसलमान है जो अल्लाह के साथ भागीदार बनाने वालों से पूर्ण रूप से बाईकाट करके उनकी उपासनाओं का निषेध करे, जिस प्रकार हजरत इब्राहीम अलै० ने मशरिकों खंर उनकी उपासनाओं से बिल्कुल अलग थलग होकर स्पष्ट शब्दों में कहा था

إني براء مما تعبدون
 إلا الذي فطرنى. الزخرف: ١٧، ١٦
 मेरा तुम्हारे उपास्यों
 से कोई सम्बंध नहीं
 मेरा सम्बंध केवल उस
 हस्ती से है जिसने मुझे जन्म दिया है-
 और इसी अर्थ का उल्लेख निम्न आयत में
 भी हुआ है:

فمن يكفر بالطاغوت
 ويؤمن بالله فقد
 استمسك بالعروة الوثقى. البقرة: ٢٥٦
 जिसे तागूत का इन्कार
 किया तथा केवल अल्लाह
 पर विश्वास रखा तो उस
 ने दृढ़ सहारा ग्राम लिया-

आयत में मजबूत सहारा से मुराद इस्लाम
 धर्म है, और "तागूत" के इन्कार से मुराद
 उन तमाम चीजों की उपासना का इन्कार करना
 और उस से दूर रहना है- जिनकी अल्लाह के
 अतिरिक्त पूजा की जाती है- और "तागूत" से

मुराद वह तमाम चीज़ें हैं जिनकी अल्लाह के अतिरिक्त उपासना की जाती है - किन्तु अल्लाह के प्रमशानी, बुजुर्गाने दीन, तथा फौख्तों को तागत नहीं कहा जायेगा क्योंकि यह लोग इस बात से कदापि प्रसन्न न थे कि इन की उपासना की जाये, बल्कि ऐसा शैतान के बहकाने से हुआ -

४- कलमा लाइलाहा इल्लल्लाह के अनुसार अल्लाह तथा रसूल के आदेशों का पालन करना जैसा कि पवित्र कुरआन में अल्लाह फरमाता है **فَاِنْ تَابُوا وَاَقَامُوا الصَّلَاةَ وَاَتَوْا الزَّكَاةَ فَخَلَوْا سَبِيْلَهُمْ** यदि वह तौबा कर के नमाज़ पढ़ने लगे और ज़कात देने लगे तो उनका रास्ता

छोड़ दो - तौबा: ५

और इसी बात का उल्लेख कुछ अधिक स्पष्ट

रूप से निम्न हदीस में भी हुआ है- जैसा कि
 नबी स० ने इरशाद फरमाया है:
 मुझे अल्लाह का आदिश أمرت أن أقاتل الناس
 है कि लोगों से युद्ध करूँ حتى يشهدوا أن لا
 यहाँ तक कि वह इस बात إله إلا الله وأن محمداً
 की गवाही दें कि अल्लाह رسول الله ويقيموا
 के अतिरिक्त कोई सत्य الصلاة ويؤتوا الزكاة
 उपास्य नहीं तथा मुहम्मद فإذا فعلوا ذلك عموماً
 स० अल्लाह के रसूल है منى دماءهم وموالاتهم
 और नमाज़ पढ़ने लगेँ الابحىق الاسلام
 ज़कात देने लगेँ, यदि وحسابهم على الله
 उन्हें ने इन कामों को أخوجه الشيخان
 कर लिया तो अब उनके धन, प्राणि मेरी ओर
 से सुरक्षित हो गये, मगर उस हालत में नहीं
 जब यह कोई दंडनीय अप्राध करें. और

इनका हिसाब अल्लाह को समर्पित है-

(बुर्राहि व मुसलिम)

और उपरोक्त आयत का अर्थ यह है कि अगर वे लोग शिर्क शिर्क को छोड़ कर नमाज़ पढ़ने लगे तथा ज़कात देने लगे तो अब उनकी राह को छोड़ दो अर्थात् उनसे छेड़ छाड़ न करो-

शैखुल इस्लाम इमाम इब्ने तैमिया रहि० फरमाते हैं: «जो मनुष्य इसलाम के सिद्ध निस्सन्देह आदेशों और शिक्षाओं से मुँह मीड़ते हैं उनसे युद्ध करना अति अनिवार्य है, यहाँ तक कि वे इसलाम की शिक्षाओं के पाबन्द हो जायें- चाहे वे कत्लमा पढ़ने वाले और इसलाम की कुछ बातों पर अमल करने वाले ही क्यों न हों- जिस प्रकार हज़रत अबू बक्र रज़ि० तथा दूसरे सहाबा रज़ि० ने

जुकात न देने वालों से लड़ाई की थी, और फिर इसी निर्णय पर तमाम इमामों व आलिमों का इत्तिफाक हो गया- (तैसीरुल अजरीजुल हम्मा)

५- कलमा शहादत के दुस्त होने के लिये अवश्यक है कि कलमा पढ़ने वाले के भीतर निम्नलिखित सात बातें पाई जायें

१- ज्ञान: अर्थात् कलमा पढ़ने वाले को इस बात का पूर्ण ज्ञान हो कि अल्लाह के सिवा कोई उपासना योग्य नहीं-

२- विश्वास: अर्थात् उसका दृढ़ विश्वास हो कि अल्लाह ही सत्य उपास्थ है, इस में उसे कोई शंका एवं सन्देह बिल्कुल न हो-

३- इखलास: अर्थात् वह अपनी समस्त उपासनाओं केवल अल्लाह की प्रसन्नता

प्राप्त करने के लिये करे, इसका एक अंश भी किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के लिये न हो।

४- सत्यता : अर्थात् वह हृदय की सत्यता के साथ कलमा पढ़े, जो जुबान से कहे वह दिल में हो ऐसा न हो कि जुबान पर कलमा लाइलाहा इल्लल्लाह हो और हृदय में उसका कोई प्रभाव न हो अगर ऐसी बात है तो वह शेष मुनाफिकों के प्रकार गैर मुसलिम और काफिर होगा, उसकी गवाही विफल होगी-

५- ईशप्रेम : अर्थात् वह कलमा पढ़ने के पश्चात् अल्लाह से प्रेम करे, अगर कलमा पढ़ लिया और उसके हृदय में ईशप्रेम न हो तो ऐसा व्यक्ति काफिर ही

होगा, उसे मुसलमान नहीं कहा जायेगा.

६- आज्ञापालन : अर्थात् वह केवल अल्लाह की उपासना करे तथा वह अल्लाह के दीन का पाबन्द हो और इस की सत्यता पर उसे पूर्ण विश्वास हो. जो मनुष्य इस से मुंह मोड़ेगा वह झुबलीस और उसके चेलों की तरह काफिर होगा.

७- स्वीकारता : अर्थात् वह कलमा शहादत के अर्थ को इस प्रकार स्वीकार करे कि अपनी सारी उपासनाएँ अल्लाह की समर्पित करदे तथा बातिल उपासियों की गल्बत समझते हुये उन से बिल्कुल दूर रहे.

८- शहादत की दुस्तगी के यह भी बहुत अनिवार्य है कि इस के विप्रीत तमाम कामों से दूर रहा जाये और वह निम्न हैं :

१- अपने तथा अल्लाह के बीच वास्ते और सिफारशी बनाना. इन को सहायता के लिये पुकारना, इनसे सिफारिश की आशा करना. और इनपर भरोसा करना, यदि किसी ने कलमा पढ़ने के बाद ऐसा किया तो वह निस्संकोच काफिर होगा -

२- मुशरिकों को काफिर न समझना या उनके काफिर होने में शंका करना अथवा उनके आह्वान को दुरुस्त समझना, ऐसा करने वाला कलमा पढ़ने के बावजूद काफिर होगा -

३- यह आह्वान रखना कि प्यारे नबी स० के जीवन व्यतीत करने के तरीके से किसी और व्यक्ति का तरीका उत्तम है. अथवा आप के शासन के तरीके से किसी और का

तरीका बदकर है जैसे तागूती और शैतानी
शासन को आप की शासन पर बढ़ावा देना
४- ध्यारे नबी स० की भाई हुई शरीअत
में से किसी बात से घृणा करना, इस काम
के करने से मनुष्य इसलाम के दायरे से
बाहर निकल जाता है चाहे वह उस बात
पर अमल ही क्यों न करता हो.

५- अल्लाह और रसूल के दीन में से किसी
चीज़ का या जज़ा सज़ा के नियम का उपहास
करना, ऐसा करने वाला काफिर है और उस
की गवाही विफल है -

६- मुसलमानों के विरुद्ध मुबारिकों को
सहयोग देना.

७- यह आह्वान रखना कि कुछ विशेष
लोग इसलाम धर्म के शास्त्र एवं आदिश

की पाबन्दी से स्वतन्त्र हैं

८ - अल्लाह के दीन से मुंह मोड़ना उस की शिक्षा प्राप्त करना और न इस पर अमल करना -

९ - अल्लाह के धर्म में से किसी बात को झुटलाना -

१० - अल्लाह और रसूल की ओर से जो काम वर्जित हैं उसे जायज एवं हलाल समझना, जैसे यह कहना कि ब्याज खाना हलाल है या यह कहना कि जिनाकरी हलाल है -

हदीसों में टकराव और उत्तर
बुरहारी संव मुसलिम धरीफ की हदीस है कि अल्लाह के रसूल (दूत) स० ने इरशाद فرमाया है :

जिस व्यक्ति ने कलमा पढ़ा ما من عبد قال لا
اله الا الله ثم مات
और इसी पर उसकी मृत्यु على ذلك الا دخل
الجنة
हुई तो वह व्यक्ति जन्नत
(स्वर्ग) में दाखिल होगा -

और इसी अर्थ की एक हदीस मुसलिम
शरीफ में थी है:

जिस व्यक्ति ने गवाही दी من شهد ان لا
اله الا الله وان
محمد عبده ورسوله
कि अल्लाह के अतिरिक्त حرم الله عليه
कोई उपास्य नहीं और
महम्मद स० अल्लाह के المنار
बन्दे (दास) एवं रसूल है -

तो अल्लाह ने उस पर जहन्नम की आग
को हराम कर दिया -

इन दोनो हदीसों और अन्य हदीसों
के बीच देखने में टकराव नजर आता है

क्योंकि इनके अर्थ से यह प्रकट होता है कि मनुष्य के जन्नत (स्वर्ग) में प्रवेश करने और जहन्नम (नरक) की आग से छुटकारा पाने के लिये केवल जुबान से कलमा लाइलाहा इल्लाह्मा हे पद लेना काफी है- जबकि दूसरी हदीसों में इस बात का स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि जहन्नम (नरक) से हर उस व्यक्ति को निकाला जायेगा जिसके हृदय में जी के दाना के समान शताई होगी- तथा उन के शरीर के उन अंगों को जहन्नम की आँच नहीं लगेगी जिन से वह सजदा करते थे- यह इस बात का दृढ़ प्रमाण है कि कुछ लोग पढ़ने के बावजूद जहन्नम (नरक) में डाले जायेंगे उनका केवल जुबानी

इकरार जहन्नम की आग से बचाव के लिये काफी न होगा -

तो इस विषय में सबसे अच्छी बात इमाम इब्ने तैमिया रहि० ने कही है जिस का ख़ुलासा यह है : « यह हृदीसों उन लोगों के सम्बंध में कही गई हैं जिन्होंने दृढ़ विश्वास तथा हृदय की सत्यता से कलमा पढ़ा और उसी पर उनकी मृत्यु हुई अर्थात् वह मरते समय तक इसी अकीदा (आह्वान) पर जमे रहे जैसा कि दूसरी दूसरी हृदीसों में इस का वर्णन स्पष्ट रूप से मौजूद है क्योंकि तौहीद (एकेश्वरवाद) की हकीकत ही यही है कि मनुष्य अपने आप को पूर्ण रूप से अल्लाह को समर्पित कर दे -

रहीं वह हृदीसों जो इस बात को जाहिर
 करती हैं कि कुछ लोग कलमा पढ़ने के
 बावजूद जहन्नम में डाले जायेंगे तो वह
 हृदीसों उन लोगों के सम्बन्ध में हैं जिन्होंने
 ने देखादेखी या आदत के अनुसार और
 रसम रिवाज के मुताबिक कलमा पढ़ ली
 परन्तु ईमान (विश्वास) उनके हृदय में
 नहीं उतरा या मृत्यु के समय तक वह
 उस पर कायम नहीं रहे जैसा कि वह तो
 का यही हाल होता है - चुनौती जो व्यक्ति
 हृदय की सत्यत तथा दृढ़ विश्वास के साथ
 कलमा पढ़ेगा और वह किसी पाप एवं
 अपराध को जान बूझ कर लगातार नहीं
 करेगा और उसका हृदय ईश्वर-प्रेम से भरा
 होगा, न तो उसके दिल में किसी गलत

काम करने का इरादा पैदा हुआ और न ही उसने अल्लाह के किसी आदेश को नापसन्द किया तो ऐसा व्यक्ति जहन्नम (नरक) की आग पर अवश्य हराम होगा.

इमाम हसन बसरी से पूछा गया कि लोग कहते हैं कि लाइलाहा इल्मल्लाह का पढ़ने वाला जन्नत में अवश्य दाखिल होगा, तो उन्होंने ने उत्तर दिया कि हाँ मगर जिसने इस के आधार और तकाजों को पूरा किया -

इमाम वहब बिन मुनबिह ने पूछा गया कि क्या लाइलाहा इल्मल्लाह जन्नत की कुन्जी नहीं है ? तो उत्तर दिया क्यों नहीं अवश्य है लेकिन कुन्जी में दाँत होते हैं यदि तुम दाँत वाली कुन्जी

भाओगे तो उस से जन्नत का दरवाज़ा
 खलेगा, वरना नहीं -
 ﷺ
 اجمعين وسام تسليما كثيرا -



**ISLAMIC PROPAGATION
OFFICE IN RABWAH**

P.O.Box 29465

Riyadh 11457

Tel 4916065

Fax 4970126

E-Mail: Rabwah@www.com

Saudi Arabia

المكتب الاماوني للمعوة والارشاد

ولهعية الجاليات بالربة

ص.ب ٢٩٤٦٥ الرياض ١١٤٥٧

هاتف ٤٩١٦٠٦٥ - ٤٩٥٤٩٠٠

فاكس ٤٩٧٠١٢٦

مطبعة دار طبعة - الرياض - ت: ٤٧٨٣٨٤٠